بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 15.08.25

मक्का पर विजयी युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का वर्णन।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (ज़हूर तिथि 15, 1404 हश)15 अगस्त 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- ﷺ

पिछले ख़ुत्बे में मैंने तीन बड़े बुतों को ध्वस्त करने के बारे में बतया था, उसका और अधिक विवरण इस प्रकार बयान हुआ है कि एक सरिय्या हज़रत सअद बिन जैद अशहली रज़ी. का था जो रसूलुल्लाह ﷺ ने 24 रमज़ान 8 हिजरी को मनात नामक बुत को गिराने के लिए भेजा था। उस बुत को लाल सागर के किनारे पर क़दीद नामक स्थान के निकट मुशल्लल नामक स्थान पर लगाया गया था, इसी कारण से उसको मुशल्लल नामक सरिय्या भी कहा जाता है। हज़रत सअद बिन जैद अशहली रज़ी. जब वहाँ पहुंचे तो वहाँ एक मुजाविर (मूर्ति का रखवाला एवं चढ़ावे लेने वाला) भी था। मुजाविर ने आप रज़ी. से पूछा कि तुम क्या चाहते हो? उन्होंने जवाब दिया कि मनात बुत का गिराना। उसने कहा कि यह असम्भव है कि यह काम तुमसे हो सके। आप रज़ी. उस बुत की ओर बढ़े। कथन बयान करने वाले ने कहा है, पता नहीं सत्य है अथवा कई बार चमत्कारी रंग देने के लिए बयान कर देते हैं कि उस समय एक नंगी, काले रंग वाली और बिखरे हुए बालों वाली महिला कमरे से बाहर निकली और मुजाविर ने अपने बुत को कहा कि ऐ मनात! अपना प्रकोप प्रकट कर। हज़रत सअद बिन जैद अशहली रज़ी. ने उस मुजाविर को मार डाला। हुज़ूरे अनवर ने व्याख्या की है कि यदि यह हत्या

वाली बात सही है तो संभवतः मुजाविर ने मुक़ाबले की कोशिश की हो, तथा मुक़ाबले में मारा गया हो। केवल बददुआ देने पर हत्या करना, यह तो इस्लाम की शिक्षा ही नहीं, उचित भी नहीं लगता, आँहज़रत ﷺ के मूल निर्देश के भी विरुद्ध है।

सरिय्या हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. जो कि नख़ला की ओर हुआ था। यह सरिय्या नबी करीम ﷺ ने 25 रमज़ान, 8 हिजरी, जनवरी 629 ई. के अनुसार क़ुरैश के प्रसिद्ध बुत उज़्ज़ा को गिराने के उद्देश्य से रवाना फ़रमाया। इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि जब उज़्ज़ा के मजाविर को हज़रत ख़ालिद रज़ी. के आने की सूचना मिली तो बुत पर तलवार लटका कर ख़ुद पहाड़ पर चढ़ गया और यह कविता पढ़ने लगा कि ऐ उज़्ज़ा! ख़ालिद पर ऐसा घोर आक्रमण कर कि जो कुछ भी शेष न छोड़े, युद्ध का कवच पहन और आस्तीन चढ़ा। ऐ उज़्ज़ा! यदि तुम इस ख़ालिद नामक व्यक्ति का वध न भी करो तो उसे तुरंत घटित होने वाले पाप का भागीदार बना अथवा उससे इसका बदला लो। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने नख़ला पहुँचते ही कीकर के वृक्षों को काटा और उस घर को ध्वस्त किया जिसमें उज़्ज़ा नामक बुत था, फिर वापस मक्का आकर आँहज़रत ﷺ की सेवा में रिपोर्ट पेश की। आप स. ने फ़रमाया कि क्या तुमने वहाँ कोई विशेष चीज़ देखी थी? हज़रत ख़ालिद ने नकारात्मक जवाब दिया। आप स. ने फ़रमाया कि फिर तो तुमने उज़्ज़ा को नष्ट नहीं किया, वापस जाओ और उसका सम्पूर्ण विनाश करके आओ। हज़रत ख़ालिद रज़ी. आदेश का पालन करने के लिए तुरन्त पलटे। जब निगरानों में दोबारा आप रज़ी. को देखा तो वे पहाड़ पर चढ़ गए और वे कह रहे थे कि ऐ उज़्ज़ा इन्हें नष्ट कर दो। इस बुत-ख़ाने में से एक बिखरे हुए बालों वाली काले रंग की महिला निकली। हज़रत ख़ालिद रज़ी. उस समय यह शेअर पढ़ रहे थे कि ऐ उज़्ज़ा! मैं तेरा इन्कार करता हूँ, तेरी प्रतिष्ठा नहीं करता, मैंने देखा है कि अल्लाह ने तुझे अपमानित कर दिया है। इसके बाद आप रज़ी. ने वापस पहुँच कर आँहज़रत ﷺ की सेवा में घटनाक्रम पेश किया तो आँहज़रत स. ने फ़रमाया कि हाँ! यह वह उज़्ज़ा है, वह निराश हो गई है कि तुम्हारे नगरों में इसकी अब कोई पूजा नहीं होगी।

फिर सरिय्या हज़रत अमरू बिन अलआस रज़ी. है जो कि सुआ नामक स्थान की ओर भेजा गया, उसका वर्णन है। यह भी रमज़ान 8 हिजरी में हुआ। उज़्ज़ा बुत के ध्वस्त होने के अभियान के साथ ही रसूलुल्लाह स. ने हज़रत अमरू बिन अलआस रज़ी. को सुआ बुत के गिराने के लिए भिजवाया। इस बुत की प्रतिमा एक महिला की थी। क़ुरआन करीम में कुछ बुतों का नाम लेकर वर्णन किया गया है, उसमें इस बुत का भी वर्णन है। अतः सूरः नूह में आता है कि उन्होंने कहा- कदाचित अपने पूज्यों को न छोड़ो और न वद को छोड़ो, और न सुआ को, और न ही यऊस और यऊक़ एवं नसर को। वास्तव में ये कुछ दिव्य पुरुषों के नाम हैं जो हज़रत नूह अलै. की क़ौम में से थे, जब वे मर गए तो शैतान ने उनकी क़ौम के दिल में यह डाला कि इन स्थानों में जहां वे बैठा करते थे, बुत खड़ा कर दो और उनके नामों पर इनके नाम रखो। अतः उन्होंने ऐसा ही किया, और उन्हें पूजा जाता था।

हज़रत अमरू बिन अलआस रज़ी. जब रहात नामक स्थान पर सुआ के निकट पहुंचे तो वहाँ उन्हें उसका मुजाविर मिला। आप रज़ी. ने कहा कि वे इस बुत को रसूलुल्लाह स. के आदेश से तोड़ने आये हैं। उसने जवाब दिया कि तुम इसे तोड़ने का सामर्थ्य नहीं रखते। आप रज़ी. ने कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि तुम हर हाल में रोक दिया जाओगे। आप रज़ी. ने कहा कि तुम पर खेद है, क्या

यह सुन सकता है और देख सकता है? फिर आप रज़ी. ने आगे बढ़ कर उसे तोड़ दिया और अपने साथियों से कहा कि वे उस कोठड़ी को भी गिरा दें जो इसके साथ बनी हुई थी। उन्होंने उसे ध्वस्त कर दिया। फिर आप रज़ी. ने उस मुजाविर से पूछा कि अब बताओ! उसने अपने पूज्य बुत का यह हाल देखा तो तुरन्त बोल उठा कि मैं अल्लाह का आज्ञा पालन करता हूँ, तथा इस्लाम क़ुबूल करता हूँ। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इस संदर्भ से भी इस बात की पुष्टि होती है कि पहले जो मुजाविर को अथवा किसी को मारने की जो घटना बयान हुई है, वह इस दृष्टि से देखी जा सकती है।

सरिय्या हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. उज़्ज़ा नमक बुत को गिरा कर वापस तशरीफ़ लाए तो आँहज़रत ﷺ ने उन्हें बनू हज़ीमा की ओर भेजा, जो मक्का से यलमलम की ओर आबाद था। नबी करीम ﷺ ने हज़रत ख़ालिद रज़ी. को फ़रमाया कि इस क़बीले को इस्लाम की दावत दें और आप स. ने यह भी फ़रमाया कि इनसे युद्ध नहीं करना। इब्ने सअद ने बयान किया कि जब ख़ालिद रज़ी. इनके पास पहुंचे तो उन्होंने लोगों से पूछा कि तुम किस दीन पर हो? उन्होंने जवाब दिया कि हम मुसलमान हैं। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने पूछा कि फिर तुमने हथियार क्यूं उठा रखे हैं? वे बोले कि हमारे और अरब की एक क़ौम के बीच दुश्मनी चली आ रही है, हमें यह आशंका हुई कि तुम वही क़ौम हो, इस लिए हथियार पकड़ लिए। अतएव रिवायतों से पता चलता है कि हज़रत ख़ालिद रज़ी. उनकी गतिविधियों से संतुष्ट नहीं थे इस लिए उन्होंने एक रात के अंतिम समय पर यह फ़तवा दे दिया कि इन बंदियों का वध करना ही उचित लगता है। इस पर कुछ मुसलमानों ने अपने बंदियों की हत्या कर डाली, किन्तु महाजिर एवं अंसार के दलों ने, जो पुराने मुसलमान थे, उन्होंने ख़ालिद रज़ी. के इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया तथा अपने क़ैदियों की हत्या नहीं की। जब आँहज़रत ﷺ को इस पूरी घटना का पता चला तो आप स. को बड़ा दुःख हुआ। आप स. ने फ़रमाया कि मैंने ख़ालिद को उन्हें मारने का आदेश नहीं दिया था, मैंने तो उन्हें केवल इस्लाम की दावत देने को कहा था, और फिर आप स. ने दोनों हाथ उठाए और दो बार ख़ुदा के समक्ष प्राथना की कि ऐ अल्लाह! ख़ालिद ने जो कुछ किया है, मैं तेरे सामने इससे विमुक्ति प्रकट करता हूँ।

फिर आप स. ने हज़रत अली रज़ी को मारे गए लोगों का धन के द्वारा बदला देने के लिए तथा पूरी घटना की जांच पड़ताल करने के लिए भेजा। हज़रत अली रज़ी. वहाँ जाकर समस्त मारे गए लोगों के उत्तराधिकारियों को मृत्य का बदला अदा किया और उनके जो माल मुसलामानों ने लिए थे, उन्हें वे सब वापस दिए, यहाँ तक कि लकड़ी का वह बर्तन भी वापस किया जिसमें कुत्ता पाने पीता था। सबको मृत्यु के बदले धन देने के बाद हज़रत अली रज़ी. के पास कुछ माल बच गया तो आप रज़ी. ने बचा हुआ माल भी उन्हीं लोगों को दे दिया और कहा कि मैं यह माल रसूलुल्लाह स. की ओर से संभावित हानि के लिए दे रहा हूँ ताकि उस संभावित हानि का भी निवारण हो जाए जिसे न अल्लाह का रसूल जानता है और न तुम जानते हो। इस पर नबी करीम ﷺ बड़े प्रसन्न हुए और हज़रत अली रज़ी. से फ़रमाया कि तू ने बिलकुल ठीक किया तथा बड़ा अच्छा किया। इस घटना से पहले आँहुज़ूर स. ने एक सपना भी देखा था कि मैंने हीस (खजूर, पनीर तथा घी से बना हुआ एक खाना) का एक निवाला लिया तो मुझे उसका स्वाद अच्छा लगा, परन्तु जब मैंने उसे निगला तो उसका कुछ भाग मेरे गले में फंस गया, फिर अली ने हाथ डालकर उसको निकाला। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने इस सपने का

स्वप्नफल बयान करते हुए निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह! यह आपके भेजे हुए सरिय्यों में से एक सरिय्या है जिसे आप स. रवाना करेंगे। उसकी कुछ चीज़ें तो आप स. को पसन्द आएंगी और कुछ आपत्ति जनक होंगी। फिर आप स. अली को रवाना करेंगे और वे इसमें सुविधा पैदा कर देंगे अर्थात मामले को ठीक कर देंगे। अतएव इस सरिय्ये की घटनाओं से यह सपना पूरा हो गया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि बुख़ारी शरीफ़ की व्याख्या हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबिदीन वली अल्लाह साहब रज़ी. ने भी लिखी है और इस पर आप रज़ी. ने एक अति विशेष नोट भी लिखा है कि यह भली भांति स्पष्ट हो जाता है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. की इसमें कोई बुरी नीयत शामिल न थी, उनसे निर्णय लेने में एक गलती हुई, इस कारण से आप स. हज़रत ख़ालिद रज़ी. से नाराज़ भी हुए और ख़ुदा के समक्ष अपने निर्दोष होने को प्रकट भी किया और जब जांच से यही साबित हुआ कि किस नासमझी के कारण ये हत्याएं हुईं हैं तभी आप स. ने हत्या के बदले हत्या का बदला देने के बजाए हत्या के बदले धन राशि दिए जाने का फ़ैसला फ़रमाया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. की प्रार्थनाएं एवं क्षमा याचना पेश करने के बाद ही नबी करीम स. ने न केवल ख़ालिद रज़ी. को क्षमा कर दिया बल्कि कुछ ही दिनों के पश्चात हुनैन नामक युद्ध के लिए तय्यार किये जाने वाले अग्रिम दल तथा घुड़ सवारों के दल का निगरान एवं सेनापति हज़रत ख़ालिद रज़ी. को नियुक्त फ़रमाया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसके अतिरिक्त दो अन्य सरिय्यों का भी संक्षिप्त वर्णन मिलता है। सरिय्या यलमलम, आँहज़रत स. ने हज़रत हिश्शाम बिन अलआस रज़ी. के नेतृत्व में 200 लोगों का एक सरिय्या मक्के के उत्तर पूर्व में स्थित यलमलम की ओर भेजा। सरिया उरना, यह अरफ़ात के सामने एक वादी है। बयान किया जाता है कि नबी करीम स. ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन अलआस रज़ी. को 300 लोगों की सेना का अमीर बनाकर भेजा था। इस सरिय्ये का वर्णन मुहम्मद बिन उमर वाकदी ने किया है। इसके अतिरिक्त किसी अन्य प्रसिद्ध जीवन चरित्र रचीयता ने इसे बयान नहीं किया, इस कारण से अभी कुछ नहीं कहा जा सकता कि यह सही भी है कि नहीं, और न कुछ अधिक जानकारी इसके विषय में मिलती है।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अतएव इसके द्वारा आँहज़रत ﷺ की सीरत का भी भली-भांति ज्ञान मिलता है कि कहीं भी आप स. ने कठोरता नहीं दिखाई तथा यह आरोप भी, जो इस्लाम के शत्रु लगाते हैं, ग़लत है कि युद्धों में आप स. ने हत्याएं करवाईं, जहां ग़लती से भी कुछ हुआ तो आप स. ने बड़ी अप्रसन्नता प्रकट की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक– 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब